

निबंध विविधा

S. B. College Library

HIN TEXT

891.431, SIN



039949

संपादक
डॉ. अनिल सिंह

हिन्दी अध्ययन मण्डल
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

निबंध विविधा

© सुरक्षित

प्रकाशक

नयी किताब प्रकाशन

1/11829, ग्राउंड फ्लोर, पंचशील गार्डन,

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

nayeekitab@gmail.com

www.nayeekitab.com

ISBN : 978-81-953969-7-9

मूल्य : ₹ 65

प्रथम संस्करण : 2021

मुद्रक : लकी प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

NIBANDH VIVIDHA

Edited by

Dr. Anil Singh

039949

निबन्ध विविधा



सम्पादक

डॉ. अनिल सिंह

सह-सम्पादक

डॉ. मोहसिन खान

सम्पादक मण्डल

डॉ. सतीश पाण्डेय

डॉ. विद्या शिंदे

डॉ. रेखा शर्मा

डॉ. एल.आई. घोरपडे

डॉ. रमा सिंह

प्रा. संतोष गायकवाड़

डॉ. रामदास तोंडे

डॉ. संध्या गर्जे



हिन्दी निबंध की विकास-यात्रा

039949

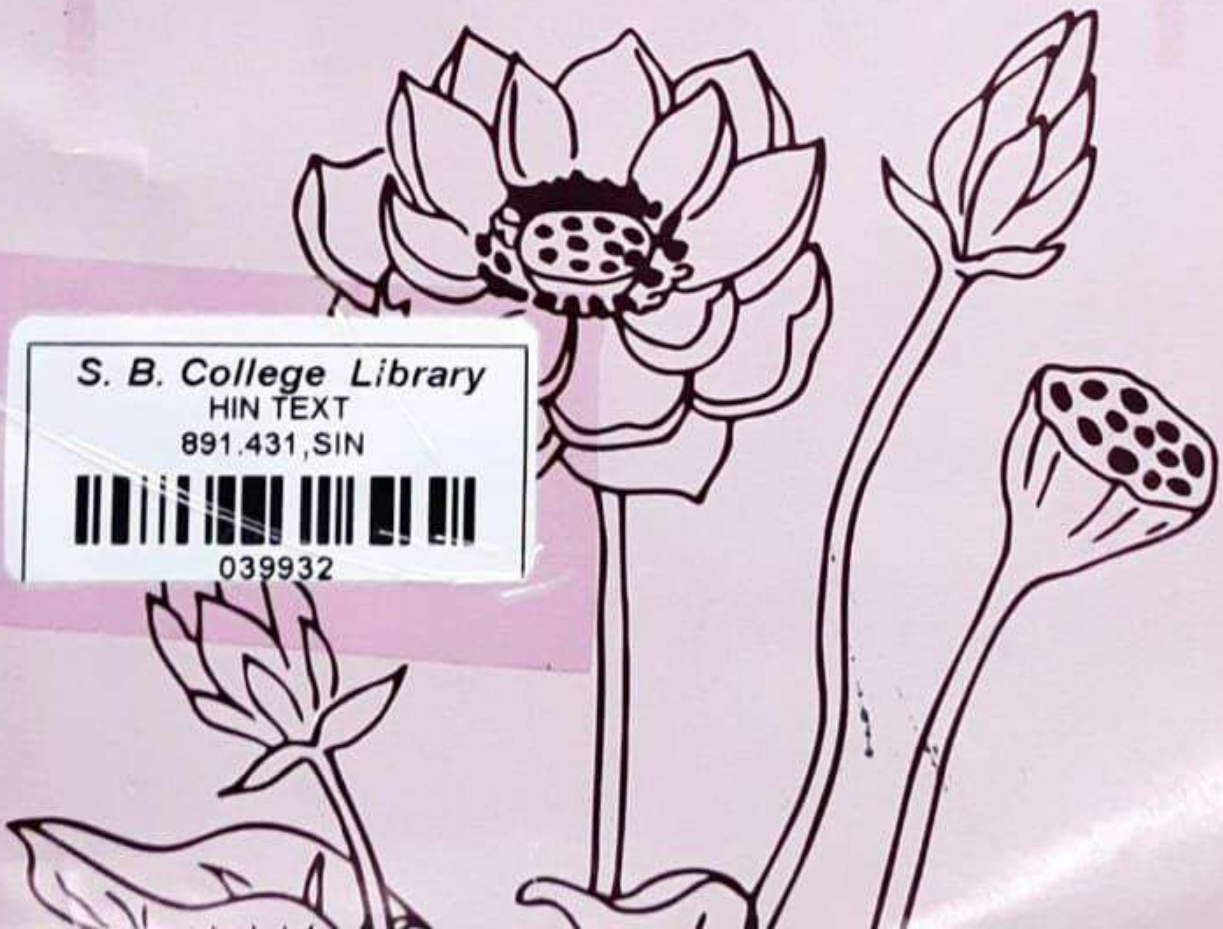
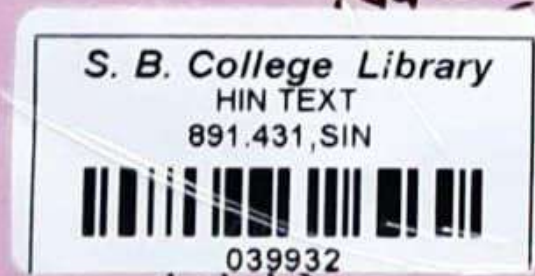
निबंध विधा का विकास भारतेंदु काल में प्रारंभ हुआ। आधुनिक काल का यह पहला चरण अनेक दृष्टियों से उल्लेखनीय है। आधुनिक काल की पूर्व पीठिका के निर्माण के दौरान भारत में तीव्रगामी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन हो रहे थे। इसके साथ-साथ औद्योगिक क्रांति के कारण एवं अन्य तकनीकी विकास के कारण मनुष्य की जीवन शैली में आमूल परिवर्तन हो गया था। मध्यकालीन मान्यताएँ ध्वस्त हो चुकी थीं। यूरोपीय संस्कृति और साहित्य के प्रभाव में भारतीय पारंपरिक विचारधारा में ऊहापोह की स्थिति उत्पन्न हो गई थी और भारतीय संस्कृति में एक आंतरिक संघर्ष आरंभ हो गया था। इन सभी परिवर्तनों के मद्देनजर हिंदी साहित्य में गद्य का उदय एक अभूतपूर्व घटना थी। हिंदी साहित्य के इतिहास के प्रथम चरण 'भारतेंदु युग' में जिन विधाओं में सर्वप्रथम लेखन शुरू हुआ उनमें निबंध, नाटक, उपन्यास आदि विधाएँ सम्मिलित थीं। इन सभी विधाओं में निबंध इस काल की सबसे प्रभावी और परिवर्तनों की भूमिका उपस्थित करने वाली विधा थी।

भारतेंदु काल से निबंध विधा का जो विकास आरंभ हुआ, वह आगे के तमाम युगों में अभूतपूर्व विकास करता हुआ यहाँ तक आया है। उस समय विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रयोजनों से निबंध लिखे जाते थे, जो विशेष रूप से पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते थे। ऐसी पत्र-पत्रिकाओं में 'हरिश्चंद्र चंद्रिका', 'ब्राह्मण', 'हिन्दी प्रदीप', 'बनारस अखबार', 'आनन्द कादम्बिनी', 'सार सुधानिधि' जैसी पत्रिकाएँ



एकांकी-सुमन

सम्पादक
डॉ. अनिल कुमार सिंह





वाणी प्रकाशन

4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
फ़ोन : +91 11 23273167 फ़ैक्स : +91 11 23275710

शाखाएँ

अशोक राजपथ, पटना 800 004, बिहार
कॉफी हाउस कैम्पस, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 211 001, उत्तर प्रदेश
महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा 442 001, महाराष्ट्र
सुल्तानिया रोड, मोतिया पार्क, भोपाल 462 001, मध्य प्रदेश

www.vaniprakashan.com
marketing@vaniprakashan.in
sales@vaniprakashan.in

EKANKI-SUMAN

Edited by Dr. Anil Kumar Singh

ISBN 978-93-5229-824-2

© प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण 2021

मूल्य : ₹ 70

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

सिटी प्रेस, दिल्ली-110 095 में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मकबूल फिदा हुसेन की कृषी से

एकांकी-सुमन



039932

सम्पादक

डॉ. अनिल कुमार सिंह

सह-सम्पादक

डॉ. मोहसिन खान

सम्पादक मण्डल

डॉ. सतीश पाण्डेय	डॉ. एल.आई. घोरपडे
डॉ. रेखा शर्मा	डॉ. विद्या शिंदे
डॉ. रमा सिंह	प्रा. सन्तोष गायकवाड़
डॉ. रामदास तोंडे	डॉ. सन्ध्या गर्जे



वाणी प्रकाशन



हिन्दी एकांकी : विकास की पृष्ठभूमि

039932

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल का महत्त्व खड़ी बोली हिन्दी के गद्य साहित्य के विकास की दृष्टि से अत्यन्त उल्लेखनीय है। आधुनिक काल में उपन्यास, नाटक, निबन्ध जैसी विधाओं का विकास आरम्भिक काल अर्थात् भारतेन्दु युग में ही हो गया था। यह वह दौर था जिसमें अभिव्यक्तिगत आवश्यकताएँ जहाँ एक तरफ विविध विधाओं के जन्म का कारण बन रही थीं वहीं दूसरी तरफ अंग्रेजी और बांग्ला जैसी भाषाओं के साहित्य से प्रेरणा लेकर भी हिन्दी में विभिन्न विधाओं का विकास हो रहा था। इसी के परिणामस्वरूप इस आरम्भिक समय तथा आगे भी समय के साथ-साथ कुछ और विधाएँ भी विकसित हुईं। एकांकी विधा भी उन्हीं में से एक है।

साहित्य की हर विधा अपना महत्त्व रखती है। यह अलग बात है कि कहानी, उपन्यास आदि की लोकप्रियता कहीं ज्यादा है, परन्तु अभिव्यक्ति के स्तर पर नाटक, एकांकी आदि का भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है और किसी भी मायने में ये विधाएँ कहानी, उपन्यास से कम लोकप्रिय नहीं हैं। स्नातक तृतीय वर्ष के पाठ्यक्रम हेतु यह एकांकी-संग्रह व्यवस्थित रूप से तैयार करने का प्रयास किया गया है। संवेदना और शिल्प दोनों ही स्तरों पर इसमें वैविध्यता रखने की कोशिश की गयी है, जिससे कि छात्र इस विधा का परिचय प्राप्त कर सकें।

हिन्दी में एकांकी विधा का विकास बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में हुआ। हालाँकि भारतीय सन्दर्भों में यह विधा हमारे लिए नयी नहीं थी और संस्कृत में 'भाण', 'वीथी', 'अंक', 'प्रहसन', 'नाटिका', 'इहामृग', 'माणिका', 'व्यायोह' आदि एक अंक वाले नाटकों का प्रचलन था। परन्तु हिन्दी में इस विधा का आरम्भ पश्चिम के प्रभाव की देन माना जाता है। पश्चिम के प्रभाव में संकलन-त्रय और संघर्षमय कार्य-व्यापार के योग से अभिव्यक्ति के स्तर पर इसी काल में एकांकी नाटक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ढंग से विकसित हुए। एकांकी, पश्चिम में अभिनीत किये जाने वाले उन नाटकों को कहा जाता था, जिनमें एक अंक में ही कथा

काव्य-सौरभ



S. B. College Library

HIN TEXT

891.431,SIN



039921

सम्पादक

डॉ. अनिल सिंह

ISBN : 978-93-90971-15-2

मूल्य : ₹75

© सर्वाधिकार सुरक्षित

पहला संस्करण : 2021

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.

1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002

शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज-211 001
36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017

वेबसाइट : www.rajkamalprakashan.com

ई-मेल : info@rajkamalprakashan.com

मुद्रक : बी.के. ऑफ़सेट

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

KAVYE-SAURABH

Edited by Dr. Anil Singh

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फ़ोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनःप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।



काव्य-सौरभ

039921

सम्पादक

डॉ. अनिल सिंह

सह-सम्पादक

डॉ. मोहसिन खान

डॉ. सतीश पाण्डेय

डॉ. एल.आई. घोरपड़े

डॉ. रेखा शर्मा

डॉ. विद्या शिंदे

डॉ. रमा सिंह

प्रा. संतोष गायकवाड़

डॉ. रामदास तोंडे

डॉ. संध्या गर्जे



राजकमल प्रकाशन



कविता : कल और आज

039921

कविता एक ऐसी विधा है, जिसका साहित्य के क्षेत्र में सबसे प्राचीन इतिहास है। किसी भी सभ्यता और संस्कृति में रची गई पहली रचना काव्य-विधा से ही सम्बन्धित है। इस तरह अभिव्यक्ति के क्षेत्र में इस विधा की सार्थकता और व्यापकता दोनों को ही समझा जा सकता है। हिन्दी साहित्य का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है और हिन्दी साहित्य भी इसका अपवाद नहीं है कि इसकी शुरुआत भी कविता से ही हुई। गद्य का स्वाभाविक विकास बहुत बाद की घटना है। अपने एक हजार वर्षों के इतिहास में हिन्दी कविता ने न जाने कितनी संवेदनात्मक समृद्धि पाई और इसके साथ-साथ उसमें हुआ शिल्पगत विकास भी अत्यन्त उल्लेखनीय है। मुम्बई विश्वविद्यालय के स्नातक पाठ्यक्रम के तृतीय वर्ष हेतु तैयार की गई यह पाठ्यपुस्तक स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य से सम्बन्धित है। इसी बहाने कविता के समेकित विकास पर एक नजर आवश्यक हो जाती है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने चार भागों में विभाजित किया था—आदिकाल (वीरगाथाकाल), पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल), उत्तर-मध्यकाल (रीतिकाल) और आधुनिक काल (गद्यकाल)। इस दोहरे विभाजन में एक तरफ जहाँ समय के सन्दर्भ थे, वहीं दूसरी तरफ कुछ प्रवृत्तियाँ भी केन्द्र में थीं। इस विभाजन में उन्होंने बहुत कुछ काव्य-चेतना को भी स्पष्टता देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आदिकाल हिन्दी साहित्य का प्रारम्भिक काल था, कविता इस काल की मुख्य विधा थी, जिसमें संवेदना-वैविध्य भी था। काव्य-सर्जन की पृष्ठभूमि में धर्म था, वीरगाथाएँ थीं, शृंगारिकता थी, नीति और उपदेशपरकता भी थी। कहने का तात्पर्य कि अपने इस प्रारम्भिक काल में अलग-अलग संवेदनाएँ अपनी शैशवावस्था में प्रस्फुटित होती दिखाई दे रही थीं। इस कालखंड पर जहाँ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का विशद अध्ययन है, वहीं दूसरी तरफ एक और विशिष्ट इतिहासकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का भी अत्यन्त श्रमसाध्य अध्ययन है। इस समय से सम्बन्धित आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की कई मान्यताओं में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के तर्कों के आधार पर परिवर्तन भी किया गया। वस्तुतः यदि विकास की दृष्टि से देखें तो इस कालखंड में हिन्दी कविता संवेदना की दृष्टि

**THEORY
PERSPECTIVES
AND
PRACTICES
ACROSS
DISCIPLINES**



**EDITOR
DR. EKNATH MUNDHE**

ISBN - 978-93-5619-925-5

THEORY, PERSPECTIVES AND PRACTICES ACROSS DISCIPLINES

ISBN : 978-93-5619-925-5



978-93-5619-925-5

Editor© : Dr. Eknath Mundhe
Publisher : Dr. Eknath Mundhe
Address : S. M. Joshi College, Hadapsar, Pune-28
Phone : 9422234344
Email : esmundheisbn@gmail.com
Edition : First, 1st April 2022
Price : Rs. 80

All rights are reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the copyright holder.

19	IMPLICATIONS OF RELIGIOUS-EDUCATION AMONG ADOLESCENTS STUDYING IN SCHOOLS	128-131
	<i>Mohini Sen Chowdhury</i>	
20	CHEMISTRY OF ALKALI METALS	132-138
	<i>R. A. Kawale & V. B. Gade</i>	
21	CHILD ABUSE AND NEGLECT- INDIAN PERSPECTIVE	139-148
	<i>Puja Singh</i>	
22	FEMINIST PERSPECTIVES ON ECONOMIC GLOBALIZATION: AN OVERVIEW	149-157
	<i>Dr. Ankush L. More</i>	
23	WRITING SKILLS MATTER TO STUDENT'S FUTURE: A WAY OF SUCCESS IN THE MODERN ERA	158-161
	<i>Jyoti Ramchandra Lekule</i>	
24	THE CHALLENGES OF GOOD GOVERNANCE AND WAY FORWARD	162-165
	<i>Dr. Aarti Sukheja</i>	
25	CUSTOMER SERVICE MANAGEMENT OF LIFE INSURANCE COMPANIES IN INDIA: A COMPARATIVE ANALYSIS	166-172
	<i>Dr. Monali Ray</i>	
26	UNLEASHING FOOD SECURITY MYTHS DURING COVID TIMES IN INDIA	173-177
	<i>Dr. Rinkoo Shantnu</i>	
27	INDIAN ORATURE: FROM EMERGENCE TO GLOBALIZATION	178-181
	<i>Dr. Lande S. D.</i>	
28	WORK FROM HOME: A DILEMMA	182-184
	<i>Dr. Noel Parge</i>	
29	CURRICULUM ADAPTATION -ESTABLISHING EQUITY IN INDIAN EDUCATION	185-195
	<i>Dr. gargi P. Sinha</i>	
30	SOLUBILITY STUDY BY UV ANALYSIS OF CARBOPOL 940 GEL BASE	196-206
	<i>Miss Sudipta Roy & Dr. Anirudh Singh Deora</i>	
31	CASHLESS SOCIETY	207-210
	<i>Mrs. Rupali Milind Patil</i>	
32	ROLE OF SHRI MAHILA SEWA SAHAKARI BANK LTD. TOWARDS WOMEN EMPOWERMENT	211-215
	<i>Sanjay Laxman Mundhe</i>	
33	THE TRADE RELATION BETWEEN INDIA AND UKRAINE FROM: 2016-17 TO 2020-21	216-220
	<i>Dr. Rodage Kailas D., Dr. Angad H. Bhondave, Mr. Vandas P. Pund</i>	
34	DISTRIBUTED COMPUTING TECHNIQUES: HANDLING BIG DATA CHALLENGES	221-235
	<i>Priti Bharambe</i>	
35	A ROLE OF GREEN TECHNOLOGY IN SUISTANBLE DEVELPOMENT	236-240
	<i>Mr. Kishor Hiraknat Agiwale</i>	
36	THE NEP 2020 – PROVISIONS AND ISSUES REGARDING SCHOOLING OF THE MARGINALIZED STUDENTS	241-245
	<i>Dr. Vikas Mane</i>	
37	IMPACTS OF NATURAL DISASTERS ON SUPPLY CHAINS IN INDIA - RECENT PERSPECTIVES	246-251
	<i>Dr. Leena Mahesh Gadkari & Dr. Pankaj Natu</i>	

CHAPTER-22**FEMINIST PERSPECTIVES OF ECONOMIC GLOBALIZATION : AN OVERVIEW***Dr. Ankush L. More*

HOD & Professor,

UG & PG Department of Economics

Sonubhau Baswant College of Arts & Commerce, Shahapur, Dist. Thane-421601 (M S)

Introduction

In its broadest sense, globalization refers to the economic, social, cultural, and political processes of integration that result from the expansion of transnational economic production, migration, communications, and technologies. Although both Western and non-Western feminists working in various areas of philosophy, including ethics, metaphysics, political philosophy, epistemology, and aesthetics, have made important contributions to debates about globalization, this entry focuses on one subset of these critiques. Below, we outline the ways in which predominantly Western feminist political philosophers who explicitly discuss globalization have articulated and addressed the challenges associated with its economic and political dimensions.

What is Globalization?**1. Economic Globalization**

Economic globalization refers to the processes of global economic integration that emerged in the late 20th century, fuelled by neoliberal ideals. Rooted in classical liberal economic thought, neoliberalism claims that a largely unregulated capitalist economy embodies the ideal of free individual choice and maximizes economic efficiency and growth, technological progress, and distributive justice. Economic globalization is associated with particular global political and economic institutions, such as the World Trade Organization, the International Monetary Fund, and the World Bank, and specific neoliberal economic policies, such as the following:

Trade liberalization: Free trade policies, such as the United States-Mexico-Canada Agreement (also known as the New NAFTA), seek to integrate regional or global markets by reducing trade barriers among nations. Signatory countries typically agree to eliminate tariffs, such as duties and surcharges, as well as nontariff obstacles to trade, such as licensing regulations, quotas on imports, and subsidies to domestic producers.

Deregulation: Trade liberalization is associated with the easing of restrictions on capital flow and investment, along with the elimination of government regulations that can be seen as unfair barriers to trade, including legal protections for workers, consumers, and the environment.

Privatization of Public Assets: Economic globalization is marked by the sale of state-owned enterprises, goods, and services to private investors in the name of expanding markets and increasing efficiency. Such assets include banks, key industries, highways and railroads, power and electricity, education, and healthcare. Privatization often also involves the sale of

Many feminists' political philosophers have argued that globalization has contributed to human rights violations against women. Most obviously, neoliberal policies have led to infringements of specific social and economic rights, such as the right "to a standard of living adequate for the health and well-being" and the right "to security in the event of unemployment, sickness, disability, widowhood, and old age" (Universal Declaration of Human Rights, article 25). Moreover, by diminishing women's economic security, neoliberal policies have exacerbated existing forms of gender discrimination and violence and made women and girls more vulnerable to a wide variety of additional human rights violations. Three examples are prominent in the literature. First, the economic insecurity and concomitant increase in poverty associated with globalization have made girls more vulnerable to sexual exploitation. In particular, girls are more likely to be sold as child brides or pushed into prostitution or sexual slavery in order to support their families. Second, when resources are scarce, women and girls are less likely to receive food than boys and men and are less likely to attend school. Finally, Shiva argues that neoliberal globalization has made women more vulnerable to sexual violence. She notes the extraordinary increase in rape in India: 800 percent since the 1970s and an additional 250 percent since the economy was liberalized. Although the reasons for this rise are complex, Shiva believes they are connected to several aspects of globalization: structural adjustment policies, which eliminated major sectors of women's economic activity; the destruction of the natural environment, which displaced many women; and the exclusion of women from economic and political decision-making.

4. Democracy and Global Governance

As with human rights, feminist philosophers have argued that globalization has contradictory implications for democratic governance. On the one hand, neoliberalism has diminished national sovereignty, further excluding women and the poor from democratic processes. Yet globalization also connects people across national borders, creating transnational communities that offer new avenues for democratic participation.

Globalization has been accompanied by the establishment of formal democracy in some countries and the number of women serving in national legislatures has increased in some nations. However, some feminist philosophers are quick to argue that neoliberalism has not resulted in increased political influence for women on the whole, especially at the level of global politics. One important reason is that global economic institutions are neither adequately representative nor fully democratic. Women are virtually absent from the formal decision-making bodies of institutions such as the WTO and the World Bank, and these institutions tend to be unofficially dominated by the interests of wealthy nations and multinational corporations.

Feminists argue that women's lack of political influence at the global level has not been compensated for by their increased influence in national politics because globalization has undermined national sovereignty, especially in poor nations. Structural adjustment policies require debtor nations to implement specific domestic policies that disproportionately harm women, such as austerity measures, despite strong local opposition. Trade rules issued by the World Trade Organization also supersede the national laws of signatory nations, including those pertaining to matters of ethics and public policy, such as environmental protections and health and safety standards for imported goods, as well as trade tariffs.

Conclusion

On the whole, globalization presents a number of challenges to feminist political philosophers who seek to develop conceptions of justice and responsibility capable of responding to the lived realities of both men and women. As globalization will most certainly continue, these challenges are likely to increase in the coming decades. As we have outlined above, feminist political philosophers have already made great strides towards understanding this complex phenomenon. Yet the challenge of how to make globalization fairer remains for feminist philosophers, as well as all others who strive for equality and justice.

References

1. Ackerly, B., 2009, "Feminist Theory, Global Gender Justice, and the Evaluation of Grant Making," *Philosophical Topics*, 37(2): 179-198.
2. Bahar, S., 1996, "Human Rights are Women's Rights: Amnesty International and the Family," *Hypatia: A Journal of Feminist Philosophy*, 11(1): 105-134.
3. Cudd, A., 2005, "Missionary Positions," *Hypatia: A Journal of Feminist Philosophy*, 20(4): 164-182.
4. Diamandis, P. and Kotler, S., 2012, *Abundance: The Future Is Better Than You Think*, New York: Free Press.
5. Enloe, C., 2000, *Bananas, Beaches and Bases: Making Feminist Sense of International Politics*, Berkeley: University of California Press.
6. Fraser, N., 2009, *Scales of Justice: Reimagining Political Space in a Globalizing World*, New York: Columbia University Press.
7. Gayatri, S., 1988. "Can the Subaltern Speak?," *Marxism and the Interpretation of Culture*, Cary Nelson and Lawrence Grossberg (eds.), Urbana, IL: University of Illinois Press, 271-313.
8. Herr, R. S., 2003, "The Possibility of Nationalist Feminism," *Hypatia: A Journal of Feminist Philosophy*, 18(3): 135-160.
9. Jaggar, A., 2001, "Is Globalization Good for Women?" *Comparative Literature*, 53(4): 298-314.
10. Khader, S., 2019, *Decolonizing Universalism: A Transnational Feminist Ethic*, Oxford: Oxford University Press.
11. Koggel, C., 2011, "Global Feminism," *Oxford Handbook of World Philosophy*, in Edelglass and Garfield (eds.), Oxford: Oxford University Press, pp. 549-559.
12. Lange, L., 2009, "Globalization and the Conceptual Effects of Boundaries Between Western Political Philosophy and Economic Theory: The Case of Publicly Supported Child Care for Working Mothers," *Social Philosophy Today*, 25: 31-45.
13. Moghadam, V.M., 2005. *Globalizing Women: Transnational Feminist Networks*, Baltimore: The Johns Hopkins University Press.
14. Nussbaum, M., 2001, *Women and Human Development: The Capabilities Approach*,
15. Robinson, M., 2004, "An Ethical, Human-Rights Approach to Globalization," *Peace Review*, 16(1): 13-17.
16. Steger, M., 2013, *Globalization: A Very Short Introduction*. Oxford: Oxford University Press.
17. Walby, S., 2002, "Feminism in a Global Era." *Economy and Society*, 31(4): 533-557.